THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

परमेश्वर ने दोबारा चोरी न करने में मेरी सहायता की।
God helped me not to steal again

Author: Name withheld

The Herald of Christian Science (French Edition) March, 2012

इस वृतांत के युवा लेखक को संरक्षित रखने के लिए, संपादक द्धारा उसके नाम को गुप्त रखा गया है।

अब मैं सोलह वर्ष का हूँ। जब मैं ग्यारह वर्ष का था, मुझे स्वीकार करना है कि मेरे लिए राहें मुश्किल थी। मैं अपना समय उन दोस्तों के साथ व्यतीत करता था जो कई बार ऐसे काम करते जो सही नहीं थे। मैं बहुत जल्दी प्रभावित हो जाता था तथा मैं वही करता जो वे करते थे "शांत" दिखाई देने के लिए दूसरों को प्रभावित करने के लिए तथा ये दिखाने के लिए कि मैं डरता नहीं था। मैं गाँजे का धूम्रपान करता तथा कई बार मै पैसे चुराता उन चीजों को खरीदने के लिए जिनकी मुझे ज़रूरत होती थी।

एक रात मैं अपने मित्र के घर सोने के लिए गया। अगले दिन हम एक पुस्तकाल्य गए जहाँ पर कीमती पत्थरों की एक प्रर्दशनी लगी थी। मैंने एक बहुत ही सुन्दर काला पत्थर देखा। मुझे यह एक खिलौने की तरह दिखा।

मेरे दोस्त ने मुझे चुनौती दी, "क्या तुम इतने बहादुर हो कि पत्थर ले सको?" मुझे उसके सवाल से ठेस पहुँची, क्योंकि ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसे नहीं लगता था कि मैं यह कर सकता था। मैंने पत्थर अपनी जेब में डाला तथा हम चले गए। हमने ध्यान नहीं दिया कि सारे पुस्तकाल्य में सुरक्षा कैमरे लगे हुए थे।

जब हम बाहर आए, हमने एक दूसरे पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया, केवल मज़ाक के लिए।

यह एक ठण्डा सर्द दिन था तथा हम वापिस मेरे दोस्त के घर जाना चाहते थे। हमने एक छोटा रास्ता लिया जो कि एक छोटी नदी के पार जाता था। नदी जमी हुई थी तथा हमने बर्फ के ऊपर छलाँग लगानी शुरू कर दी। मैंने अपने हाथ में पत्थर पकड़ा हुआ था, किन्तु हमारे पैरों के नीचे की बर्फ टूट गई तथा मैंने अपनी पकड़ पत्थर से खो दी। यह पानी में गिर गया। हमने पाँच मिनट के लिए खोजा, परन्तु हम गीले तथा बहुत ठण्डे थे, इसलिए हमने खोजना बन्द कर दिया। मैं परेशान था कि मैंने पत्थर खो दिया है, क्योंकि मैं इसे रखना चाहता था। तथा मैं भयभीत था कि पुलिस मुझे ढूँढ़ते हुए आ सकती है। परन्तु मैं घर चला गया तथा अपने आप से कहा कि पुलिस इसके बारे में कुछ नहीं जानती थी। मैं सारी घटना को भूल गया।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

कुछ हफ्तों बाद, मैं स्कूल में था तथा मुख्याध्यापक मेरी कक्षा में आए मुझे अपने ऑफिस में बुलाने के लिए क्योंकि कोई मुझसे मिलना चाहता था। जब मैं उनके ऑफिस में गया, एक सिपाही वहाँ था और उसने मुझसे पूछा, "क्या तुम जानते हो हम यहाँ पर क्यों हैं?" मैं ईमानदारी से नहीं जानता था, क्योंकि मैं पत्थर के साथ वाली घटना के बारे में सब कुछ भूल चुका था। सिपाही ने कहा, "हमने तुम्हें देखा था।" मैंने उत्तर दिया, "आपने मुझे क्या करते हुए देखा था?" उसने कहा, "हमने तुम्हें पुस्तकाल्य में से एक कीमती पत्थर चुराते हुए देखा था।" मैं निरूत्तर हो गया तथा मुझे एहसास हुआ क्या हो रहा था। मैं वास्तव में डर गया था। सिपाही ने मुझे बताया कि इस घटना की वजह से मुझे नौजवान अपराधियों की संस्था में रहने के लिए ले जाया जा सकता है तथा मेरी माता को भारी जुर्माना देना पड़ सकता है। उसने मुझे बताया कि मैंने एक संग्रह वाले पत्थर को लिया है जो कि लगभग 2000 तथा 3000 अमेरिकन डॉलर के बीच की कीमत का था।

सिपाही ने मुझसे पूछा,"पत्थर कहाँ है?" मैंने उसे बताया कि मैंने उसे अपने मित्र के घर के पास वाली छोटी नदी में खो दिया है। सिपाही ने पूछा, "कहाँ?" वह सब कुछ जानना चाहता था। मैंने प्रार्थना की। सबसे पहले मैंने परमेश्वर से मुझे माफ करने के लिए कहा। अपनी प्रार्थना में मैंने स्वीकार किया कि मैंने जो कुछ भी किया गंभीर रूप से गलत था तथा यह कि तुम दस आज्ञाओं के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते। मैंने सीखा था कि बाइबल में से एक आज्ञा कहती है, "तुम चोरी नहीं करोगे" (निर्गमन 20:15) मैंने परमेश्वर को पत्थर खोजने में मेरी मदद करने के लिए कहा। मैंने वादा किया कि इस मदद के बदले में, मैं दोबारा कभी भी चोरी नहीं करूँगा।

बेशक मैं डरा हुआ था। मुझे विश्वास था कि परमेश्वर मेरी मदद करेंगे। मैं एक क्रिश्चियन साँयस संडे स्कूल में जाता था जहाँ अध्यापक मेरी समस्याओं को सुलझाने के लिए मेरे साथ आध्यात्मिक विचारों को बाँटते थे। क्रिश्चियन साँयस के बारे में जानने से पहले मैं जब भी प्रार्थना करता मैं परमेश्वर से भौतिक चीजें माँगता। परन्तु क्रिश्चियन साँयस का धन्यवाद मैंने सीखा कि प्रार्थना का उद्देश्य आध्यात्मिक चीजों के लिए प्रार्थना करना है, जैसे प्रेम तथा असली सेहत, दूसरों की मदद करने के बारे में सोचना तथा लोगों के प्रति दयालुता है। चर्च में जाने से मुझे परमेश्वर में ज्यादा विश्वास मिला तथा जो लोग वहाँ उपस्थित होते थे मैंने उनका सहारा महसूस किया।

अपनी कहानी की ओर वापिस जाते हुए, सिपाही मुझे मेरे मित्र के पड़ोस में पत्थर को खोजने के लिए ले गया। परन्तु वहाँ पर पाँच या छः छोटी नदियाँ थी, सब एक दूसरे के करीब, तथा मैं याद न कर सका कि मैंने किसमें पत्थर को खो दिया था।

अपनी प्रार्थनाओं का धन्यवाद, मैंने किसी एक छोटी नदी की तरफ खिंचाव महसूस किया। मैं जानता था कि परमेश्वर अनन्त, ज्ञान तथा बुद्धिमता है, कि परमेश्वर मेरा सान्तवना दाता है तथा कुछ भी बुरा घटित नहीं हो सकता था। मैंने वास्तव में एक निश्चित जगह की तरफ निर्देशित पाया तथा मैंने एक चट्टान ली तथा इसे सतह पर फेंक दिया, बर्फ को तोड़ने के लिए। मैंने अपना हाथ बर्फीले पानी में डाला, पत्थर को ढूंढने के लिए, परन्तु मुझे कुछ नहीं मिला। मैंने दूसरी बार फिर किया, कुछ नहीं। तीसरी बार, पूरे हृदय के साथ मैंने परमेश्वर को मार्गदर्शन के लिए पुकारा। मेरे हाथ ने अन्त में एक पत्थर को छुआ तथा मैंने महसूस किया कि यह समान आकार का था जिस तरह का वह पत्थर था जिसे हम खोज रहे थे। मैं सोच रहा था कि यह लगभग असम्भव था कि यह वही सही पत्थर हो, परन्तु मैंने इसे पानी में से बाहर निकाला तथा यह वास्तव में वही पत्थर था! केवल परमश्ेवर ही वह कर सकता था। मैं बहुत खुश था

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

तथा मेरे माता–पिता और सिपाही भी। सिपाही ने मुझे दोबारा कभी भी चोरी न करने के लिए कहा क्योंकि यह मुझे बहुत महँगा पड़ेगा। मेरे माता–पिता ने भी मुझे इस तरह का काम दोबारा कभी न करने के लिए कहा। उन्होंने कहा, ''परमेश्वर ने तुम्हें दिखाया कि उसने तुम्हारी सुनी इसलिए अब तुम्हें उसको दिखाना होगा कि तुम भी उसको सुन रहे हो, क्योंकि इस तरह से तुम अपने आपको उसके अधिक नज़दीक महसूस करोगे।''

तब से, मैंने दोबारा कभी भी चोरी नहीं की तथा मैंने गाँजे का धूम्रपान बन्द कर दिया। मैंने उनकी मित्रताएं खत्म कर दी जो मुझे परमेश्वर से दूर ले जाते थे। मैंने इस अनुभव से सीखा कि चुराने से मेरा कुछ भला नहीं हो सकता। मैं क्रिश्चियन साँयस के प्रति आभारी हूँ क्योंकि यह मुझे देखने में सहायता करती है कि अच्छे काम करने से मुझे सब कुछ मिलता है, क्योंकि मैंने जो भी सब अच्छा किया मुझे अच्छे के रूप में वापिस मिला। परमेश्वर अच्छा है तथा मेरे लिए उसको प्रतिबिम्बित करना स्वभाविक है। अब मैं एक अच्छा लड़का हूँ। मैं लोगों की मदद करता हूँ। तथा मेरे अच्छे मित्र है। अब मुझे अपने मित्रों को कुछ भी प्रमाणित करने की जरूरत नहीं, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं परमेश्वर का बच्चा हूँ तथा मेरे पास पहले से ही सब कुछ है जो मेरी खुशी के लिए ज़रूरी है।

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.